डॉ. सुभाष शर्मा के काव्य में स्त्री संवेदना

श्री.संतोष शेट्टी,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
महात्मा गांधी मेमोरियल कालेज,
उडुपि, कर्नाटक
ई-मेल: santoshshetti84@gmail.com
Ph no: 09916529629

संतोष शेट्टी, डॉ. सुभाष शर्मा के काव्य में स्त्री संवेदना, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक 1/सितंबर 2021,(38-43)

प्रस्तावना : डॉ सुभाष शर्मा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न हिन्दी के एक महत्वपूर्ण रचनाकर हैं । समाजशास्त्री और साहित्यकार साथ - साथ होने के कारण इन्होंने साहित्य सृजन कार्य का आरंभ नवें दशक के मध्य में किया । पिछले चार दशकों से लेखन के प्रति प्रतिबद्ध रहे हैं । इस अवधि में इन्होंने साहित्य की भिन्न - भिन्न विधाओं कविता , कहानी , निबंध , नाटक आदि की रचनाएं की । साहित्येत्तर – समाजशास्त्र , शिक्षा शास्त्र, राष्ट्रीय विकास , भाषा और समाज,स्त्री, और ग्लोबल आदि समस्याओं पर केंद्रित प्रचुर मात्रा में निबंधों और उत्कृष्ट पुस्तकों की रचना की , जिसका अपने अपने क्षेत्र में तो महत्व है ही , इस ज्ञान और समझ का उपयोग इनके रचनात्मक साहित्य पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षरूप से पड़ा है, इसमें कोई दो राय नहीं । समीक्षक एवं हिन्दी प्राध्यापक जवाहर पाण्डेय के अनुसार " शर्मा जी उन दिनों अपनी कविताओं और विशेषकर कहानियों के कारण चर्चा में आए । "

आरंभिक दिनों में इनका झुकाव काव्य - रचना की ओर रहा । नवें दशक के उत्तरार्द्ध में इनकी कविताएं महत्वपूर्ण पत्र -पत्रिकाओं प्रकाशित हो कर प्रशंसित हुईं । आगे चलकर इनके दो काव्य संग्रह- 'जिंदगी का गद्य' और 'अंगारे पर बैठा आदमी ' प्रकाशित हुआ । पाठकों ने इसे खूब सराहा पर आलोचकों का मौन आश्चर्य में डालने वाला सिद्ध हुआ । साहित्य की समकालीन राजनीति के शिकार हुए सुभाष शर्मा कविता के क्षेत्र में इनकी लंबी चुप्पी का एक बड़ा कारण शायद यह भी रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं । खैर

अत्यंत विलंब से ही सही, 2007 में इनका तीसरा काव्य-संग्रह 'हम भारत के लोग' प्रकाशित हुआ । इस संग्रह में पहले के दो संग्रहों की चुनी हुई कुछ कविताएं शामिल की गई हैं । जवाहर पाण्डेय के अनुसार " इस संग्रह को इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह कहा जाय तो कोई अतियुक्ति नही होगी । " इस संग्रह की कविताओं से इनके विकास -क्रम की पहचान सहजता से की जा सकती है।

आठवें और नवें दशक के संक्रांति काल के कवि के रूप में इन्हें स्वीकार किया जाना चाहिये।एक नए रचनाकार की रचनात्मक ऊर्जा और संवेदनात्मक संवेग तथा इनकी मनःस्थिति का सहज संकेत यहां मिल जाता है।यह समय रचनात्मक शिल्प भाषा- बोध,समाज की रीति नीति,और भारतीय राजनीति में नईप्रवृति ने सामयिक समाज को गहरे प्रभावित किया, इसमें कोई दो राय नहीं।कितना सकारात्मक और कितना नकारात्मक यह बात और है। किंतु शर्मा जी ने कविता की जो राह पकड़ी वह कलुष और पूर्वाग्रह रहित एक सरल मार्ग था।अवश्य ही एक किशोर और युवा हृदय पर तत्कालीन परिस्थितयों का गहरा प्रभाव रेखंकित किया जा सकता है।शिल्प और भाषा की दृष्टि से इन्होंने काव्य का निश्छल मार्ग पकड़ा । पर इनकी कविताओं में विम्ब और प्रतीक योजनाएं किसी सधे हुए कवि के काव्य की प्रतीति कराता है,इसमें कोई संदेह नहीं।मुझे तो किसी कवि के काव्य-साधना जैसा लगता है। यह बहुत बड़ा कारण है। प्रभाव की दृष्टि से इसमें गहरी भेदकता है।सिर्फ भावुकता नहीं गहरे चिंतन और मनन का प्रतिफल है यह। इनकी कविताएं जो समाज को प्रति पल बदलती प्रवृतियों का सूक्ष्म अन्वेषण कराती प्रतीत होती है।वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में बहु भांति शोधन के लक्ष्य तक कवि की पहुंच बनी रहती है।आज के अनेक जरूरी सवालों से जूझ ने की कोशिश काव्य प्रक्रिया का सार्थक हिस्सा है। काव्य-वस्तु या काव्य-विषय के आधार तंतु का वैविध्य इनकी कविताओं में सर्वत्र फैला हुआ है,कवि अपने समय में जिन सवालों से खुद को घिरा पाता है उसे जस का तस अपने पाठकों तक पहुँचाना चाहता है,कवि का काव्य-व्यक्तित्व यहां निजी नही रह जाता।यही कारण है कि कवि-अनुभव का व्यापार व्यापक बन जाता है तथा विस्तार और गहराई प्राप्त करता है।कवि की काव्य- यात्रा के बहुत आरम्भ से ही एक नई सोच का अनुभव दिखाई देने लगता है।रूढ़ मानसिकता के विरुद्ध नव ग्राम्य- चेतना का उदय होने लगा था।सम्वेदना के धरातल पर एक नए मार्ग का चुनाव कवि के प्रगतिशील सोच को उजागर करता है,जिसका निरंतर विकास होता रहा और एक नए पथ का मार्ग भी प्रशस्त होता रहा।लाचारगी और बेचारगी के अंतहीन समाज की चुनोतियों को आत्मसात करते हुए उस पर इन्होंने जमकर प्रहार किया।वस्तुतः यही नव- निर्माण की सोच काव्य- वस्तु का जरूरी उपकरण बना।कवि अपने विश्वास का संबल इन पंक्तियों में व्यक्त करता है-

प्यार और पानी अंधे होकर भी

राह खोज लेते हैं अपनी अपनी
किसी ढलान की तरफ----(-तुम्हारी आंखें-1981)

अपने अपने समय के घटाटोप अंधेरे में आखिर कोई कवि क्या तलाशता है!उत्तर तो यही है कि अंधकार से मुक्ति का कोई मार्ग और यह स्वतः प्राप्त नही होता, यत्न करने होते हैं।कवि सुभाष शर्मा का यह कथन बार बार स्मरणीय है-
युग बदलेगा सुबह कब होगी?

हमारे समय का सबसे भयानक और जरूरी सवाल है यह।नाउम्मीदी के इस दौर में सिर्फ उम्मीद की किरणें नही कवि को एक पूरा नया सूरज दिखाई देता है—
एक सूरज और निकलेगा
जिसमें पहचानेंगे हम लोग
किसी धातु की सुगंध------(आवाज1981)

उम्मीद की यह कविता न अकारण है और न ही निरर्थक।इसके ऐतिहासिक कारण है।आठवें और नवें दशक के कतिपय कवियों मेंनिराशाके स्वर घर करने लगे थे तो उसके विरुद्ध आगे बढ़ कर जिन लोगों ने नई चेतना, और उम्मीद जगाई ,उस पंक्ति में सुभाष शर्मा आगे बढ़ कर आये।दुख और पीड़ा की स्थिति को बदल देने वाले साहस के स्वर बिल्कुल साफ सुनाई देने लगे।सब कुछ बदल देने की उम्मीद के साथ।इनकी कविताओं में उजाले और रोशनी वाले शब्दों की आवृत्तियाँ है।सूरज,धूप ,लालटेन मोमबत्ती और लौ यहां गहन प्रतीक की प्रतीति कराते हैं और सचमुच विरुद्धों के खिलाफ ये साहस के औजार की तरह प्रयुक्त होते दिखाई देते हैं।

सच यह है कि समकालीन अनेक सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय, राजनीतिक, और अनेक ग्लोबल समस्याएं मनुष्य विरोधी समस्याएं बन कर उभरी है । इसकी विडम्बनाएं और विद्रूपताएं इस कवि का पीछा करती हैं एक गहन पीड़ा के साथ।

सबसे पहले और गंभीरता से इनकी नज़र भारतीय महिलाओं की ओर जाती है। एक भारतीय स्त्री की पीड़ा का बयान 'एक और अहिल्या' है । अहिल्या वस्तुतः भारतीय समाज की एक मिथक कथा है पर अंतहीन है उसकी त्रासदी । वह पुनः पुनः जन्म लेती और दुखों के प्रसव वेदना से निरंतर छटपटाती रहती

है और दूसरी ओर सृष्टि और निर्माण के लिए सर्वस्व दान करती रहती है । अपने इस अंतर्विरोधी परिस्थितियों में युग युग से जीने के लिए अभिशप्त है। इस कवि की नज़र में आज की एक अहिल्या के जीवन की बिडम्बनापूर्ण झाँकी द्रष्टव्य है-

सा'ब तारते रहे उसे उस घड़ी तक
जब तलक वह / कुंआरी मां नही बन गई।

किसी को उपकार करने कराने का छद्म चेहरा एकाएक मनुष्य से राक्षस रूप में परिवर्तित हो उठता है। ऐसे लोग समाज में खोल डाल कर विचरण करते हैं और मौका पाते ही खोल से बाहर निकल आते हैं । कवि का इस संदर्भ में यह स्पस्टीकरण विचारणीय है-

पहले को तारा था अवध के सम्राट ने
दूसरे को एक नेताजी नौकरशाहने

छद्म सम्वेदना का स्पष्ट संकेतयहां देखा जा सकता है।गलीज स्वार्थी किस प्रकार नारी मर्यादा का हनन करताहै अवसर मिला नहीकीडंक मार छुप जाता है।

स्त्री सम्वेदना को केंद्र में रखकर इस संग्रह में और भी उत्कृष्ट रचनाएं देखी जा सकती है स्त्री के जीवन में एक ओर शोषण है तो दूसरी ओर मातृत्व और अंतहीन प्यार की अनुभूति । सृष्टि की कला निर्मात्री और अनबुझी पहेली। स्वेटर बुनती स्त्रियां अपने व्यापक फलक में पाठकों को सोचने के लिये मजबूर करती हैं।

एक और अहिल्या , सूरज कब निकलेगा , मालिक और मजदूर , मेरी कलम, काली रात , प्रजातंत्र , एक और वियतनाम , बहादुर , लालटेन ,सुनों कुम्हार,पगडंडी ,गीदड़ , मेम साहब का कुत्ता ,जैसी दर्जनों कविताएं वस्तु और शिल्प की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। खेत-खलिहान, मजदूर मालिक,न्याय-अन्याय, सुजन दुर्जन,नेता-अभिनेता, शोषण-कुपोषण, प्रदूषण, न्याय-अन्याय, नीति-अनीति, धर्म अधर्म, इतिहास-पुराण, देश-विदेश, पेड़-पौधे पशु पक्षी, युद्ध-शांति, नीति-अनीति, अमानुष-मानुष जैसे असंख्य प्रसंग संग्रह की कविताओं में विन्यस्त है। आस -पास के इन प्रसंगों और सामयिक दृश्यों को आत्मसात करते हुए कवि मनुष्यता के पक्ष में खड़ा होता है। खुद को जोखिम में डालने वाले नए कवि की परंपरा में ,जो लोग समझते

हैं कि कविता एक निरर्थक बहस है उन्हें सुभाष शर्मा की कविताई का स्मरण करना चाहिए इस संदर्भ में,-' यह शहीदों की बस्ती है एक 'महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय रचना है।

पहले आतंकवादी
सारी हुकूमत से ज्यादा
पाश से डरते थे
क्योकि उसकी कलम से
फंदे निकलते थे।

इसी कविता में सफदर हाशमी,गोरखपांडेय मानबहादुर सिंह जैसे क्रांतिकारी कवियों की शहादत का स्मरण किया गया है।यह अकारण नही।संघर्षशील कवियों के ये नामभर नहीं हैं।इससे क्रांतिकारी कविता का औचित्य भी सिद्ध होता है।वास्तव में क्रांतिकारी बड़ बोलेपन से नहीं,एक सार्थक चेतना और स्थितियों परिस्थितियों के साहस से जन्म लेते हैं।सुभाष शर्मा ऐसी ही कोटि के काव्य साधक हैं।वे प्यार के भी कायल हैंऔर आक्रोश के भी,पर सब कुछ दीपक की लौ की तरह है,आहिस्ता-आहिस्ता दर्प से भरा सूरज के प्रकाश की तरह।इनकी प्रतिबद्धता जुगाड़ू किस्म की चालाकी और लोभ-लाभ का प्रतिकार करती,शालीन काव्य परंपरा का अनुसरण करती है। हिंदी काव्य की ठेठ जातीयता के साथ एक प्रकार के अंतरंग संबंध स्थापित करती हुई।इनके काव्य की सार्थकता यही है और स्थापत्य भी यही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) हम भारत के लोग - डॉ सुभाष शर्मा – मेधा बुक्स, नवीन शाहदरा , दिल्ली – 110032
२) कवि डॉ सुभाष शर्मा से फोन संपर्क
३) समीक्षा - जवाहर पांडेय
४) जनपथ मासिक पत्रिका (ISSN 2277-6583) सितम्बर-अक्टूबर 2018 : कुटिलता के विरूद्ध एक प्रतिकार : जवाहर पांडेय

****